अध्याय - 8

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः प्रार्थना करें और अपने दल और इस पाठ्यक्रम को परमेश्वर को समर्पित करें कि वे प्रभु के लिए अनेक चेले बना सकें।

2.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट) ***[शान्त समय]*** **मत्ती 25:14 – 28:20**

बारी-बारी पढ़े और वचन बाँटे, (या अपने नोट्स में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो आपने परमेश्वर के साथ जो वचन आपको दिया गया था (मत्ती:25:14 – 28:20) तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी गवाही बाँट रहा है उसे गम्भीरता से सुनें और ग्रहण करें। जो वह बाँट रहा है उस पर बहस न करें।

3.	**याद करना** (20 मिनट) ***निश्चितता*** **क्षमा निश्चित है -1 युहन्ना.1:9**

क. प्रोत्साहित करना (याद करने के लिए)

पढ़े मत्ती 22:23-33, 41-46 और लूका 10:25-26
खोजें और विचार-विमर्श करेः बाइबल के पदों को याद करना क्यों ज़रूरी है?(चाहे वे लेखाँश हो या अध्याय)
लिख लेः याद किए गए बाइबल के पद आप को इस योग्य बना देंगे कि आप मनुष्य के प्रश्नों के उत्तर दे सकें।

ख. मनन करना (बाइबल के एक लेखाँश पर)

एक सफेद काग़ज़ पर या श्यामपट पर याद करने वाला पद लिख लें

क्षमा निश्चित है **1 युहन्ना 1:9**
यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने में और हमें सब पापों से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य है **1युहन्ना 1:9**

काग़ज़ के पिछली तरफ बाइबल का संदर्भ वचन लिख दें।

1. मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं अपने पाप को मान लूँ।

अपने पाप को मान लेने का अर्थ है कि जब वह हमें हमारे पाप को दिखाता है तब हम परमेश्वर की बात से सहमत हैं। इसका अर्थ यह भी है कि हम उस से सहमत हो जाएँ जैसा बाइबल हमें बताती है कि पाप क्या है। इसका अर्थ यह है कि हम परमेश्वर से कह सकें कि हम ने क्या गलती की है। और यह भी बताना ज़रूरी है कि हम ने कौन सी सही बातें नहीं की हैं।

2. परमेश्वर की ज़िम्मेदारी है कि वह हमें क्षमा कर दे और हमें शुद्ध कर दे।
जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है तो वो सारे अपराध बोध व पाप की शर्म को भी हटा देता है।
यीशु मसीह मारे गए क्योंकि उन्होंने हमारे पापों के लिए पश्चाताप् करके उसकी कीमत चुकाई थी। उसने परमेश्वर के क्रोध को जो हम पर हमारे पापों के कारण था उन्हें दूर किया था। (रोमियो 3:25;भजन 32:5) अब हम उसकी आँखों में

दोषी नहीं हैं और अब हमें अपने पिछले पापों भरी ज़िन्दगी के लिए शर्मिन्दा होने की ज़रूरत नहीं है। परमेश्वर फिर कभी हमारे पापों को याद नहीं करेगा। (मीका 7:18-19; इब्रानियों 8:12) और वह कभी भी हमारे पुराने पापों के लिए हमें दोषी नहीं ठहराएगा। (युहन्ना 5:24) वह हमें पूरी तरह से धर्मी का दर्जा देता है और वह हमारा अपने परिवार में स्वागत करता है। (लूका 15:20-24)

जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा कर देता है तो वह उनके सारे परिणामों को भी हम से दूर कर देता है।
इसका अर्थ है कि वह हमें शुद्ध और पवित्र कर देता है। वह हमारी अन्तर आत्मा को शुद्ध कर देता है। (इब्रानियों 9:14) वह हमारी सोच और जो हम करते हैं उसे बदल देता है। वह हमें एक धार्मिक जीवन शैली प्रदान करता है।

जब परमेश्वर हमारे पाप क्षमा करता है तब वह हम पर से पाप की राज्य शक्ति हटा देता है
वह हमें पाप की आदतों की गुलामी से आज़ाद कर देता है। जिससे हम अपने शरीर के भागों को धार्मिकता का साधन बना सकें जो पवित्रता की ओर लो कर जाता है। (रोमियो 6:6,13,19)

3. परमेश्वर विश्वासयोग्य और न्यायी है।

परमेश्वर न्यायी है(धर्मी और पवित्र है) इसलिए वह मेरे पापों का प्रायश्चित कर सकता है और अन्त में सारे पापों को क्षमा कर सकता है। परमेश्वर विश्वासयोग्य है इसीलिए उसने आपके सारे पापों के लिए प्रायश्चित पहले से कर दिया है और अन्त में उन्हें क्षमा कर दिया है। हर बार जब आप पाप करते हैं, तुरन्त उसे परमेश्वर के सामने मान लें और वह उनको क्षमा कर देगा और आपको पवित्र कर देगा।

ग. याद व पुनरावलोकन करना

1.लिख लेः बाइबल का पद एक खाली गत्ते या अपनी कापी के पन्ने पर लिख लें।
2.याद करेः तुरन्त बाइबल के पद को याद कर लें। हमारे पास क्षमा का आश्वासन है।(1युहन्ना 1:9)
3.पुनरावलोकनः दो के दलों में बाँट ले और एक दूसरे को जाँच ले कि आप ने पद याद कर लिया है।

4.	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट)	***जीवन के विषय में प्रश्न***
		मैं यहाँ पर क्यों हूँ? इफिसियों 4:17 – 5:17

बाइबल अध्ययन के लिए बाइबल अध्ययन के 5 कदमों के तरीके का प्रयोग करें।

1 पहला तरीका - पढ़ेः **परमेश्वर का वचन**

पढ़ेः आईए हम सब एक साथ पढ़े, इफिसियों 4:17 – 5:17
आईए हम सब इस लेखाँश का एक-एक पद बारी बारी पढ़ें जब तक पूरा लेखाँश खत्म न हो जाए।

---

2. दूसरा तरीका. - खोज निकालेः **अवलोकन**
ध्यान देः इस लेखाँश में कौन सा सच आपके लिए महत्त्वपूर्ण है?
या फिर कौन से सच ने आपके दिल को छू लिया है?
लिख लेःएक या दो सत्य जो आपने खोजे और समझे हैं उन्हें अपनी कॉपी में लिख लें।
गवाही बाँटेः (जब दल के सभी सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें। (नीचे कुछ लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने अपने विचार बाँटे थे कि उन्होंने क्या पाया था। पर याद रहे हर छोटे दल में लोग अलग-अलग बातें बाँटते हैं। पर यह ज़रूरी नही है कि सब के विचार एक समान हो।)

1. पहला खोजः परमेश्वर की मर्ज़ी जानने का महत्त्व।

इफिसियों 4:30 कहता है, "परमेश्वर की पवित्रात्मा को शोकित न करो।"इफिसियों 5:10 कहता है, "और वह खोज निकालो जो परमेश्वर को भाता है।"और इफिसियों 5:17 कहता है, "इस कारण ध्यान से समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है।"सच तो यही है कि परमेश्वर इस बात में रुचि रखता है कि मैं हर दिन कैसा जीवन बिताता हूँ। हर दिन मैं जैसे जीता हूँ वह परमेश्वर को शोकित कर सकता है या दुखी कर सकता है। पर यदि मैं मैं झूठ बोलता हूँ और अपने क्रोध पर नियन्त्रण नहीं रखता हूँ, चोरी करता हूँ, निन्दा करता हूँ या लड़ाई करता हूँ तब जैसे मैं जी रहा हूँ उससे परमेश्वर का आत्मा दुखी होता है। पर जो इसके विपरीत है वह भी सच होगा। जब भी मैं सच बोलता हूँ, अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखता हूँ, अपना काम करता हूँ और बाँटता हूँ, लोगों को क्षमा करता हूँ, उनको ऊँचा उठाता हूँ, तब परमेश्वर का आत्मा खुश होता है। और तब जैसे मैं जीता हूँ उससे परमेश्वर खुश होता है। इसीलिए बाइबल कहती है, "समझें कि परमेश्वर की इच्छा (मरज़ी) क्या है।"जितना अधिक मैं अपने जीवन के लिए परमेश्वर की मर्ज़ी को समझूँगा उतना ही अधिक वह जीवन जीऊँगा जो परमेश्वर को पसंद है। इसलिए मैं सोचता हूँ कि इस प्रश्न का उत्तर कि "मैं यहाँ क्यों हूँ?" यही है कि मैं यहाँ इस लिए हूँ कि उसकी मर्ज़ी को जान लूँ और जैसे मैं जीता हूँ उससे परमेश्वर को खुश कर सकूँ।

---

2. दूसरी खोजः मै कैसे जीता हूँ (व्यवहार करता हूँ) इसके महत्त्व को जानना।

इफिसियों की पत्री मूल रूप से एक शब्द का अनेक बार प्रयोग करती है और वह है "चलना"अर्थात "व्यवहार करना" या अपना रोज़ का जीवन जीना। इफिसियों 2:2 कहता है कि इससे पहले कि हम मसीही बनें थे हम आत्मिक रूप से मृत थे क्योंकि हम पाप में जीते थे। इस संसार के परमेश्वर रहित संसार में शैतान की आज्ञाओं को मान कर जीते थे। इफिसियों 2:10 कहता है, मसीही बनने के बाद हमें भले कामों के साथ जीना चाहिए जो परमेश्वर ने पहले से हमारे लिए रख छोड़े हैं कि हम उनको करें। इफिसियो 4:1 कहता है, "जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए हो उसके योग्य चाल चलो। "इफिसियों 4:17 कहता है, "जैसे अन्य जाति के लोग अपने मन की अनर्थ रीति से चलते हैं तुम अब से फिर वैसे न चलो।" इफिसियों 5:2 कहता है, "और प्रेम की चाल चलो जैसे मसीह ने तुम से प्रेम किया था। एक बुद्धिमान के समान न कि किसी मूर्ख के समान।" इफिसियों 5:8 कहता है, "अब तुम ज्योति की संतान के समान जियो।" और इफिसियो 5:15 कहता है, "इस लिए ध्नान रखो कि कैसी चाल चलते हो, निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो।" सच तो यह है कि परमेश्वर मुझे स्पष्ट रूप से बताता है कि मैं कैसा जीवन बिताऊँ। वह वचन के शब्दो में मुझ से बात करके बताता है कि मैं अपने प्रतिदिन के जीवन में कैसे चलूँ।

इस प्रश्न का उत्तर, "मैं यहाँ पर क्यों हूँ?" यही है कि, "मैं यहाँ इसलिए हूँ कि मैं अपना जीवन वैसे ही जीऊँ जैसे परमेश्वर चाहता है।" और वह कारण जिसके लिए मैं इस पृथ्वी पर जीता हूँ वह यह है कि मैं परमेश्वर को खुश कर सकूँ। लेखक पौलूस का कहना है, "चाहे तुम खाओ या पीओ या जो कुछ भी करो सब कुछ परेमेश्वर की महिमा के लिए करो।" (1 कुर.10:11) परमेश्वर ने मनुष्यें की रचना करके उन को इस पृथ्वी पर भेजा है कि वे परमेश्वर की महिमा करें। जब लोग वह रास्ता चुन लेते हैं जिससे परमेशवर की महिमा हो तो परमेश्वर को अच्छा लगता है और वह खुश होता है। लेकिन यदि लोग अपनी मर्ज़ी से चुन कर जीवन जीना चाहते हैं तब परमेश्वर दुखी हो जाता है और उनको सज़ा देता है और उनको अपने राज्य से अलग कर देता है।

3.तीसरा तरीका - प्रश्न **व्याख्या करना**

ध्यान देः वह कौन सा प्रश्न है जो किसी भी विषय में आप दल से पूछना चाहते हैं?
आईए हम इफिसियों 4:17 - 5:17 में जो सत्य निहित हैं उनको समझने की कोशिश करें। और उन बातों के विषय में प्रश्न करें जो अब तक हमें समझ नहीं आई हैं।
लिख लेः अपने प्रश्न सही और स्पष्ट रूप से पूछें और फिर उसे अपनी कॉपी में लिख लें।

गवाही बाँटेः दल के सभी सदस्य दो मिनट तक मनन करें और फिर हर सदस्य अपने प्रश्न को दल के साथ बाँटें।

ध्यान देः अब सभी प्रश्नों में से कुछ प्रश्न चुन लें और विचार-विमर्श करके अपने दल में उनके उत्तर को खोजने की कोशिश करें।
नीचे कुछ प्रश्नों के उदाहरण दिए हए हैं जो विद्यार्थी पूछ सकते हैं। और साथ ही विचार-विमर्श के बाद उन को अपनी कापी में लिख सकते हैं।

4:17

प्रश्न 1. इसका अर्थ क्या है कि अन्य जाति के लोग अपने विचारों के कारण अपना जीवन व्यर्थ गंवा रहे हैं?

लिख लेः अन्य जाति के लोग वे हैं जो अब तक यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं। बाइबल बताती है कि अन्य जाति के लोग खुशी प्राप्त करने के लिए जितनी भी कोशिश कर लें वे अन्त में सदा निराश ही होंगे। उनका जीवन एक लम्बे इन्तज़ार का जीवन होगा जहाँ पर उनकी इच्छाएं कभी भी पूरी नहीं होंगी।वे जो चाहते हैं उसका पीछा तो करते हैं लेकिन उसे कभी भी प्राप्त नहीं कर पाते हैं। उनके पेड़ों में फूल के समान खिलते तो हैं पर फलवन्त नही होते हैं। वे कभी भी लम्बे समय तक रहने वाले परिणामों के साथ जीवित नहीं रहते हैं। वे उसका अनुभव करते हैं जो प्रचारक ने अपने जीवन में अनुभव किया था, "यह कि सारी नदियाँ बह कर समुद्र में समा जाती हैं पर समुद्र कभी भी पूरी तरह से भरता नहीं है।.... और और मेरी आँखों की देखने की लालसा काफी न थी और न ही मेरे कानों ने वह सब सुना जिसकी मुझे लालसा थी।। मैंने अपने दिल को किसी भी आनन्द को भोगने से नहीं रोका था...लेकिन जब भी मैं ने देखा कि जो कुछ मेरे हाथों ने किया था तो मैं ने देखा कि वह सब तो जैसे व्यर्थ था, मानों हवा के पीछे भागने के समान था।" (सभोपदेशक 1:7-8, 2:10-11_ जो लोग परमेश्वर के बिना होते हैं उनकी सोच ऐसी किसी चीज़ की रचना नहीं कर सकता है जो संतोष दे सके।

4:18

प्रश्न 2. बाइबल ऐसा क्यों कहती है कि अन्य जाति के लोग इस लिए अज्ञानी होते हैं क्योंकि उन्होंने अपने हृदयों को कठोर कर लिया है?

लिख लेः सृष्टि की उत्पत्ति के समय सब लोग जीवित परमेश्वर के अस्तित्व को जानते थे। लेकिन मनुष्य के पाप में गिर जाने के कारण मनुष्य धीरे-धीरे परमेश्वर को भूलने लगा था और ऐसा जीवन जीने लगा था परमेश्वर के जीवन से रहित था। जब परमेश्वर ने हनोक और नूह के द्वारा लोगों से बात करनी चाही थी तब लोगों ने अपने दिलों को कठोर कर लिया था।

जब जब लोग निरन्तर पाप करने में डटे रहते हैं तब परमेश्वर उन्हें छोड़ देता है कि वे अपने पाप के पूरे परिणामों का दुख सहें। अन्य जाति के लोग जब अपने हृदय को कठोर कर लेते हैं तब परमेश्वर उनको कठोर बनने देता है। परमेश्वर उनको कठोर बना देता है जो खुद को परमेश्वर के विरुद्ध कठोर बना लेते हैं। अपने ही जानबूझ कर किए कर्मों के कारण अन्य जाति के लोग कठोर बन जाते हैं। अन्यजाति के लोग परमेश्वर के बारे में सोचना भी नहीं चाहते हैं इसी लिए परमेश्वर ने उनको जीवित परमेश्वर के विषय में अंधा बना दिया था। वे इस बात के प्रति भी अंधे थे कि वे वास्तव में अंधे थे। (युहन्ना 9:40-41) वे लोग जो परमेश्वर के बिना जीवित रहने पर डटे रहते हैं वे इस बात को जानते भी नहीं हैं कि वे जीवित परमेश्वर के बिना जी रहे हैं क्योंकि वे परमेश्वर के अस्तित्व से अनजान है। वे जीवित परमेश्वर के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं।

4:22-24

<u>प्रश्न 3. आप अपने पुराने मनुष्यत्व को त्याग कर नए मनुष्यत्व को कैसे पहन सकते हैं?</u>

नोट्सः दोनों क्रिया शब्द किसी प्रक्रिया की ओर संकेत नहीं करते हैं। वह तो सदा के लिए एक ही बार की प्रक्रिया को बताते हैं जो मेरे पुनर्जन्म के समय हुई थी। उस समय जब मैं ने पहली बार यीशु मसीह पर विश्वास किया था, तब मैं ने एक ही बार अपने पुराने मनुष्यत्व को त्याग कर एक नए मनुष्यत्व को पहन लिया था। मेरा पुराना मनुष्यत्व तो परमेश्वर से और मेरी पुरानी जीवन शैली से अनजान था। मेरा नया व्यक्तित्व तो परमेश्वर की मर्ज़ी का और ऐसा जीवन जीने का ज्ञान है जो परमेश्वर को पसन्द है। मेरा नया व्यक्तित्व ही अब मेरी पहचान है। अब **"**मैं मसीह में हूँ**"** और कभी भी अकेला नहीं हूँ। **"**मेरा जीवन अब मसीह के साथ परमेश्वर में छुपा हुआ है।**"** (कुलु.3:3)

लेकिन इस एक ही बार की शुरूआत में मैं चाहता हूँ वह मुझे जीवनपर्यन्तउस प्रक्रिया की ओर ले जाए, जहाँ पर मैं अपने पापों को मान कर यीशु मसीह के गुणों को धारण कर लूँ। वे विशेष पाप कौन-कौन से हैं जिन को मुझे त्यागना होगा? बाइबल बताती है कि मुझे विशेष रूप से झूठ बोलना, क्रोध करना, चोरी करना, लड़ाई करना, निन्दा करना, यौन अनैतिकता, लालच और हर प्रकार के द्वेश भाव को त्यागना होगा। वे कौन सी विशेष धार्मिक बातें हैं जिनको हमें पहनना है? बाइबल बताती है कि हमें जो ग्रहण करना है वह है सच बोलना, अपने क्रोध पर नियन्त्रण करना, मिल-बाँट कर काम करना, दया करना, करुणा दिखाना, क्षमा करना, प्रेम करना, धन्यवाद करना, परमेश्वर की मर्ज़ी को जानना और उसके उस ज्ञान को पा लेना कि जीवन को कैसे जिया जाए।

4:26

<u>प्रश्न 4. इसका क्या अर्थ है कि क्रोध तो करो पर पाप मत करो?</u>

लिख लेःकुछ लोग सोचते हैं कि एक मसीही को कभी भी क्रोध नहीं करना चाहिए। वे कहते हैं कि हर प्रकार का क्रोध पाप है। अन्य लोग सोचते हैं कि आप क्रोध कर सकते हैं क्योकि क्रोध का पाप से कोई मेल नही हैं। लेकिन ये दोनों दृष्टिकोण गलत है।

बाइबल कहती है, **"**क्रोध करो पर पाप मत करो।**"** क्रोध अपने आप में पाप नहीं है क्योंकि क्रोध तो परमेश्वर के नाम से जुड़ा है। परमेश्वर का क्रोध धार्मिक नाराज़गी की भावना है। वह उसकी हर गलत काम और दुष्टता के प्रति नाराज़गी है। मसीही लोगो को भी उन लोगों के प्रति जो दुष्टता करते हैं इस धार्मिक नाराज़गी की भावना हो सकती है। इस तरह के क्रोध को धार्मिक क्रोध कहते हैं। धार्मिक क्रोध तो किसी व्यक्ति, किसी विषय के प्रश्न पर होता है और उसे नाराज़गी नियन्त्रण के साथ उस गलत बात के लिए जो लोग कहते या करते हैं, उसके प्रति हमारे व्यवहार और बातों के द्वारा दिखाई जाती है। परमेश्वर अपना धार्मिक क्रोध अस्थाई सज़ा के रूप में, न्याय के द्वारा दिखाता है। (रोमियो 1:18; 2:5-6; इब्रानियों 12:6) और यीशु मसीह ने भी (मत्ती 21:12; युहन्ना 2:15-16) में अपना क्रोध दिखाया था जब उन्होंने अस्थाई सज़ा दी थी।

लेकिन अधिकतर समय जब हम मनुष्य क्रोध करते हैं तब हम अपने क्रोध को केवल उस व्यक्ति तक या उस मसले तक सीमित नहीं रखते हैं। हम कुछ भी नियन्त्रण में रहीं रख पाते हैं और हम बुरे शब्दों को प्रयोग करते हैं जो कि दुखी करने वाले होते हैं। इस तरह से हम पाप करते हैं। जब कभी क्रोध को नफ़रत के रूप में गलती करने वाले पर प्रकट किया जाता है या गाली देकर या हिंसा के साथ, तब वह क्रोध पाप बन जाता है। पाप से नफरत करने के लिए और पापी से प्रेम करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की ज़रूरत है।

4:26

प्रश्न 5. इसका क्या अर्थ है कि सूरज डूबने से पहले क्रोध शान्त हो जाना चाहिए

नोट्सः बाइबल में सूरज के ढलने का अर्थ है दिन का समाप्त हो जाना। अनेक लोग तो कई बार सालो-साल लोगों से गुस्सा रहते हैं। वे क्षमा नहीं कर पाते हैं और कड़वाहट से भरे रहते हैं। वे गलतियों की एक लम्बी सूची बना कर रख लेते हैं जो दूसरे लोगों ने उनके विरुद्ध गुज़रे सालों में की हैं। वे सदा उनकी आलोचना करते रहते है और उसके लिए ताने मारते रहते हैं। बाइबल बताती है कि एक मसीही को दिन भर के लम्बे अरसे से अधिक समय के लिए क्रोध नहीं करना चाहिए। उस दिन के समाप्त होने से पहले अर्थात सूरज डूबने से पहले या फिर सोने से पहले उसे जिससे वह गुस्सा है उससे मेल-मिलाप कर लेना चाहिए। उसे दया करके उस गलती के लिए जो दूसरे व्यक्ति ने की है उसके लिए क्षमा कर देना चाहिए।

4:27

प्रश्न 6. हम शैतान को पैर रखने का स्थान कैसे दे देते है?

लिख लेःबाइबल इफिसियों 4 के 26 और 27 पदों को इस बात से जोड़ती है। 27 पद तो कहता है, "शैतान को अवसर मत दे।"उसका अर्थ है कि शैतान को जीवन के उस क्षेत्र मे प्रवेश करने का मौका न दो। अर्थात मेरे शरीर में प्रवेश न करने पाए जिससे कोई नुकसान पहुँचा सके, विशेषकर जब मैं क्रोध से भरा हूँ। उस समय मैं शैतान को अवसर न दूँ कि वह मेरे क्रोध को नफरत में बदल कर मुझे उस बात को दिल में रख कर क्षमा न करने दे। इतना ही नहीं, ध्यान रहे कि कहीं वह मुझ को हिंसक न बना दे। इसी लिए ज़रूरी है कि मैं जल्दी से क्षमा करना सीख लूँ। और इसी लिए इफिसियों 4:32 कहता है कि मुझे अपने विरुद्ध गलत करने वाले को मैं वैसे ही माफ कर दूँ जैसे यीशु ने मुझे क्षमा किया है।

इफिसियो 6:11 यह भी जोड़ता है, "परमेश्वर केसारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियोंं के सामने खड़े रह सको।"शैतान तो कोई भी युक्ति लगा कर कोशिश करेगा कि मैं पाप करूँ। वह मेरे क्रोध को पकड़ लेगा और उसे गालियों और हिंसक व्यवहार में बदल देगा। वह मेरे लालच को पकड़ लेगा और और मुझे धोखा देने या चोरी करने को उकसाएगा। वह मेरे भय को पकड़ लेगा और मुझे झूठ बोलने पर मजबूर कर देगा। इसी लिए याकूब का 4:7 कहता है, "इस लिए परमेश्वर के अधीन रहो और शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा।"

4:29

प्रश्न 7. आप कैसे सहायक शब्द बोलेंगे जो दूसरे लोगों का निर्माण कर सकते हैं?

लिख लेः नीति वचन की पुस्तक मुझे सिखाती है कि मैं कैसे बात करूँ जिससे दूसरों की सहायता हो सके। मुझे कुछ बोलने से पहले सोचना चाहिए कि मैं क्या उत्तर दूँ। मुझे अपना उत्तर सही समय पर देना चाहिए। मुझे एक नम्र उत्तर देना चाहिए। (नीति वचन 15:28,23,1) इफिसियो 4:15 कहता है, "सच्चाई और प्रेम से उत्तर दो जिससे हम मसीह में जो कि सिर है बढ़ते जाएँ।"इफिसियो 4:29 कहता है, "कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले पर आवश्यक्ता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिए उत्तम हो ताकि उससे सुनने वाले पर अनुग्रह हो।"इस रीति से बोलने का नियम, निर्माण के लिए एक और तरीका है।

बोलने के विषय के तीन महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों का साराँश कि बोलने से पहले मुझे खुद से क्या प्रश्न करने हैं।

1. क्या वह सच है या नहीं? और यदि वह सच नहीं है तो क्या मुझे चुप रहना है?
2. यदि यह सच है तो क्या यह दूसरे व्यक्ति को बनाएगी या तोड़ डालेगी? और यदि तोड़ डालेगी तो

क्या मुझे चुप रहना है?
3. यदि वह उसका निर्माण करेगी तो क्या मै उसे प्यार से कहूँगा या नहीं? और यदि मैं उसे प्यार से नहीं कह सकता है तो क्या मुझे चुप रहना होगा?

5:7

<u>प्रश्न. 8. कैसे लोगों के साथ एक मसीही को संगति नहीं करनी चाहिए?</u>

लिख लें। मसीही लोग एक पापी और टूटे हुए संसार में जीते हैं, लेकिन वे इस पापी और टूटे संसार का भाग नहीं हैं। (युहन्ना 17:11,16)मसीहों को इस संसार की अन्य जातियों के बीच अपनी ज्योति को चमकने देनी चाहिए। (इफिसियों 5:14-16) लेकिन मसीहों को उन अन्य जाति के लोगों का साथी नहीं बनना चाहिए जिनके कार्य फलवन्त नहीं हैं। (इफिसियों 5:11) और न ही उनके साथी बने जो आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं। **पढ़ें** 1 कुर.5:9-13

<u>प्रश्न 9. आप क्या सोचते हैं कि इफिसियों 4:17 - 5:17 आपके जीवन में क्यों महत्त्वपूर्ण है?</u>

लिख लेः इफिसियों 4:17 - 5:17 हमें सिखाता है कि मैं यहाँ इस पृथ्वी पर क्यों है। मैं इस पृथ्वी पर इस लिए हूँ कि मैं वह जीवन जीऊँ जो परमेश्वर चाहता है। एक नया जीवन जो परमेश्वर की मर्ज़ी के अनुसार है और जो परमेश्वर को पसंद है और जो उसकी महिमा करता है। एक नया जीवन वह है जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे बुलाया है। (इफीसमयों 4:1) जो अन्य जातियों के जीवन से एक दम अलग है। (इफीसियो 4:17; 2:2) नया जीवन लगातार पुराने जीवन के व्यक्तित्व को जो पापों से भरा है उसे छोड़ कर एक नई धार्मिकता को ग्रहण करना है। यह नया जीवन वह जीवन है जो सच्चाई, धार्मिकता, और पवित्रता के विशेष लक्षणों से सजा होता है। इफीसियो 4:22-24) प्रेम (5:2) ज्योति (5:8) बुद्धि (5:15) इफिसियों 4:17 - 5:17 हमें सिखाता है कि हमारा जीवन कैसे अर्थपूर्ण बन सकता है और इस संसार में उसका एक उद्देश्य है।

---

4. चौथा तरीका **लागू करना**

ध्यान देः इस लेखाँश में कौन से ऐसे सत्य है जो मसीहों पर लागू किए जा सकते हैं?

गवाही बाँटें और उसे लिख लेः आईए हम हर व्यक्ति के दिमाग़ में तूफान मचा दें और उनके विचारों की एक सूचि बनाएँ कि कहाँ-कहाँ पर इफिसियों 4:17 - 5:17 के सत्यों को लागू किया जा सकता है।

ध्यान देः वह कौन सा सत्य है जिसे परमेश्वर आपको अपने जीवन में लागू करने को कह रहा है?

लिख लेः अपनी निजि कापी में जो सत्य आपने लागू किया है उसे लिख कर रख लें। और उसको दूसरों में स्वतन्त्र हो कर बाँटें। (याद रहे कि हर दल में लोग अलग-अलग सत्य को अपने जीवन में लागू करेंगे और कई लोग तो एक ही सत्य को अलग रीति से लागू करेंगे। नीचे उन सत्यों को लागू करने की एक सूची है जो सत्य लागू करने की सम्भावना है।

<u>1. वे सम्भव उदाहरण जो इफिसियों के 4:17 - 5:17 में लागू किए गए थेः</u>

4:17-19 ध्यान दे कि मेरे चारों तरफ रहने वाले अन्य जाति के लोग कैसे हैं। फिर उनसे भिन्न रीति की चाल चलें।

4:24 ध्यान दे कि किस रीति से सच्चाई, धार्मिकता, और पवित्रता मेरे जीवन में और अधिक वास्तविक रूप ले सके।

4:25 हर तरह के झूठ को त्याग दें। केवल सत्य ही बोलें।

4:26 अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखना सीख लें। सोने जाने से पहले ही क्रोध को त्याद दें।
4:27 सावधान रहें कि कहीँ शैतान आपके जीवन में अपना कदम न जमा सके।
4:28 किसी ज़रूरत मन्द के साथ कुछ बाँट लें।
4:28 खुद काम करके पैसा कमाएँ।
4:29 अपने शब्दों के द्वारा जो मैं बोलता हूँ उससे लोगों का निर्माण हो।
4:30 संवेदनशील बन जाएँ जिससे आप पवित्र आत्मा को शोकित न करें।
4:31 हर तरह की दुष्टता और द्वेश भावना को दूर करें।
4:32 अपने प्रति गलत करने वालों को तुरन्त क्षमा कर दें।
5:1 परमेश्वर को और अच्छी तरह से जान लें और उसी की नकल करें।
5:2 और अधिक सीखने का प्रयास करें कि कैसे एक मसीही के समान प्रेम कर सकते हैं।
5:3-7 उन लोगों से दूर रहे जो गन्दी या गलत बातें बोलते हैं।
5:8-14 अपने जीवन के अन्दर के अन्धकार और अपने भाईयों के जीवन को अन्धकार को सब के सामने ले कर आएँ।
5:15-17 सीख कर बुद्धिमान बन जाओ और परमेश्वर की मर्ज़ी को पूरा करो।

2. इफिसियों के 4:17 - 5:17 मे दिए निज जीवन में सत्यों को लागू करने के उदाहरणः

मैं एक ऐसा जीवन जीना चाहता हूँ कि मैं हर समय परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस कर सकूँ कि जो मैं कर रहा हूँ वह परमेश्वर को पसंद है। मैं विशेष रूप से चाहता हूँ कि मैं अपने क्रोध पर काबू रख सकूँ। और जिस ने मेरे विरुद्ध गलत किया है उससे दिन समाप्त होने से पहले मेल मिलाप सकूँ।

मैं एक ऐसा जीवन जीना चाहता हूँ जो परमेश्वर को पसंद हो विशेष रूप से तब जब मैं अपनी किसी गन्दी आदत को छोड़ कर एक अच्छी नयी आदत बना लूँ और लगातार कोशिश करके अभ्यास करूँ जब तक बुरी आदत छूट न जाए और परमेश्वर मेरे जीवन का नए सिरे से निर्माण न कर दें।

---

5. पाँचवाँ तरीका **प्रतिक्रिया**

आईए हम एक सच के विषय में प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने इफि.4:17 - 5:17में हमें सिखायागया है। अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें उस के लिए जो आपने बाइबल अध्ययन के दौरान सीखा है। कोशिश करें कि केवल एक या दो लाइन में ही प्रार्थना करें। याद रखें दल के अन्य लोग अन्य विषयों पर प्रार्थना करेंगे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***मध्यस्थता*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

लगातार प्रार्थना करते रहेः दो या तीन के दल बना कर एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें और साथ ही संसार के लिए भी प्रार्थना करें।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को तैयारी के लिए घर का काम लिखित रूप में देंगे और उसे कापी पर उतारने को कहेंगे।

1.समर्पणः हर सदस्य किसी एक सत्य को लागू करने के लिए, जो सम्भव हैउसके सिए समर्पण करेगा।

2.परमेश्वर के साथ निजि समयः परमेश्वर के साथ एक निजि समय निर्धारित करें जिस में 1 युहन्ना1:1-4:22 से हर दिन आधा अध्याय पढ़ेंगे। और सत्य खोजने के लिए अपने मनपसंद तरीके का प्रयोग करेंगे। अपने नोट्स बनाएँ।

3. याद करेः नए बाइबल के पद पर मनन करे और उसे याद कर लें, **"क्षमा का आश्वासन"**

नए पद को याद करें जो आश्वासन देते हैं कि प्रार्थना में क्षमा है। (1 युहन्ना 1:9) हर दिन पिछले तीन पदों को फिर से दोहराएँ।

4.प्रार्थनाः किसी विशेष व्यक्ति या किसी विशेष चीज़ के लिए प्रार्थना करें कि इस हफ्ते परमेश्वर आपके लिए क्या नया कर रहा है। (भजन 5:3)

5.अपनी कापी को पूरा करेः आपने कितने चेले बनाए, इसके साथ वह सभी नोट्स जो आपने परमेश्वर के साथ निजि समय बिताते समय सीखा, और जो पद आपने याद किए थे। साथ ही आपके बाइबल अध्ययन के नोट्स भी लिख लें।